B-2
L-26
Modern
India

भारत छोड़ो आंदोलन

महत्वपूर्ण बिन्दुः-

• गांधीजी ने 1942 में निर्णायक आंदोलन के रूप में भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया और मंत्र दिया "करो या मरो"। स्पष्टतः गांधी अब किसी समझौते के लिए तैयार नहीं थे। स्वाभाविकतः प्रश्न उठता है कि गाँधी की इस मनःस्थिति को किन परिस्थितियों ने निर्मित किया:-

a) 1935 के अधिनियम से प्रांतों में पूर्ण उत्तरदायी सरकार का प्रावधान लाया गया और इसी संदर्भ में 1937 में चुनाव आयोजित हुए जिसमें कुल 11 प्रांतों में से 8 प्रांतों में कांग्रेस सरकार बनाने में सफल रही।

किन्तु जब 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हुआ, तो बिना कांग्रेसी सरकारों से

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सलाह लिए बिना ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सेना को ब्रिटेन की तरफ से युद्ध में झोंक दिया तो असंतुष्ट होकर प्रांतीय कांग्रेस सरकारों ने इस्तीफा दे दिया जिससे सम्पूर्ण राजनैतिक वातावरण असंतुष्ट होने लगा।

b) 1940 में गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह का आह्वान किया जो इस बात का प्रतीक था कि इस युद्ध में भारत अंग्रेजों के साथ नहीं है। (प्रारंभ - महाराष्ट्र के पवनार से, प्रथम सत्याग्रही - विनोबा भावे, द्वितीय सत्याग्रही - जवाहरलाल नेहरू)

c) 1940 की गर्मियों में गांधी के मन में एक अजीब सी उत्सुकता देखी जा सकती है -

(i) कांग्रेस की वर्धा समिति में उन्होंने अंग्रेज को चुनौती देते हुए कहा कि, "यदि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आंदोलन नहीं किया गया तो मैं देश के बाद से कांग्रेस से भी

बड़ा आंदोलन शुरू कर देंगा।"

(ii) अंग्रेजों से भी गाँधी ने स्पष्ट कहा कि "वे भारत से चले जाएं और अराजकता की परवाह न करें, भारतीयों को उनके भाग्य पर छोड़ दें।"

d) द्वितीय विश्वयुद्ध के दौर में जापान की आरंभिक विजयों से ऐसा लगने लगा था कि ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण जापान अब अगला आक्रमण भारत पर ही करेगा। अतः भारत को ब्रिटेन व जापान की रणभूमि बनने से बचाना आवश्यक हो गया था, जिस तरह अंग्रेज मलाया व बर्मा से वहां के नागरिकों और भारतीयों को उनके हालात पर छोड़कर भागे थे, उससे यह आशंका प्रबल हो गयी थी कि भारत में भी कहीं ऐसी स्थिति न उत्पन्न हो जाए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

e) क्रिप्स मिशन (1942):- युद्धकालीन परिस्थितियों में भारतीयों का सहयोग लेने के उद्देश्य से क्रिप्स मिशन भारत आया, उसने अपने प्रस्तावों को दो भागों में बाँटा:-

(i) युद्धकालीन परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार तत्काल प्रभाव से एक युद्ध परामर्शदात्री समिति बनाएगी, जिसमें भारतीय भी शामिल होंगे।

(ii) संविधान सभा का निर्माण तथा अखिल भारतीय संघ के निर्माण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर फैसला युद्ध के बाद किया जाएगा।

क्रिप्स के इन प्रस्तावों से यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज अभी भी भारतीयों को वास्तविक अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे और ये संवैधानिक सुधार केवल युद्ध में भारतीयों का सहयोग लेने के स्वार्थ से युक्त

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

हीं महत्वपूर्ण अधिकारों को युद्ध के बाद दिए जाने के आश्वासन से असंतुष्ट होकर गाँधीजी ने इसे "पोस्ट डेटेड चेक" की संज्ञा दी।

• 1940 का दशक आते-आते भारतीय राष्ट्रवाद अपने चरम पर आ पहुँचा था, अब लोगों के मन मस्तिष्क में भारत की आजादी का प्रश्न प्राथमिक बन चुका था और प्रायः सभी भारतीय इस आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका दर्ज कराना चाहते थे। गाँधी ने देश के इस मनोभाव को परख लिया और इसी संदर्भ में निर्णायक आंदोलन के रूप में भारत छोड़ो का आह्वान किया।

भारत छोड़ो आंदोलन के लक्ष्य व कार्यक्रम

• 8 अगस्त, 1942 को बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान से भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित

हुआ जिसमें स्पष्ट घोषणा की गयी कि आजादी से कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं होगा। जिसका नाम है अगस्त संकल्प।

- असहयोग व सविनय अवज्ञा आंदोलन के कार्यक्रमों को इस आंदोलन में भी शामिल किया गया परन्तु पहले के आंदोलनों से इसका स्वरूप बदलते हुए अब सरकारी सेवकों को पद पर रहते हुए ही आंदोलन के प्रति निष्ठा व्यक्त करने को कहा गया।
- रियासतों में लोकतंत्रीकरण का समर्थन और भारतीय सैनिकों को सरकार का आदेश न मानने की अपील की गयी। गाँधी ने यह भी स्पष्ट कहा कि किसी भी स्थिति में, चाहे सभी नेतृत्वकर्ताओं की गिरफ्तारी ही क्यों न हो जाए, आंदोलन वापस नहीं

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

लिया जाएगा।

• इस आंदोलन में कुछ ऐसी गतिविधियाँ या कार्यक्रम भी चर्चित हुए जो आंदोलन के मूल कार्यक्रम का हिस्सा नहीं थे, वस्तुतः यह आंदोलन के दौरान ही उत्पन्न व लोकप्रिय होते गए जैसे कि यातायात व संचार साधनों को क्षतिग्रस्त करना।

विशेष • भारत छोड़ो आंदोलन में भारत के सभी राजनैतिक दल शामिल नहीं थे इसमें साम्यवादी दल का निर्णय इसलिए उल्लेखनीय बन जाता है कि कांग्रेस से भी पहले उसने द्वितीय विश्वयुद्ध को "साम्राज्यवादी युद्ध" करार देकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आंदोलन की माँग की।

• किन्तु जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया, तो साम्यवादी पलट गए और

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

किसी भी तरह के आंदोलन का विरोध करने लगे और यहां तक कहा कि इस समय अंग्रेजों का विरोध करने का अर्थ फासीवादी ताकतों का समर्थन करना होगा।

• उदारवादी दल तथा डा॰ अम्बेडकर ने भी आंदोलन को असामयिक बताते हुए इसका समर्थन नहीं किया, उनके अनुसार इस समय आंदोलन करने से भारतीयों की समस्या कम होने के बजाय बढ़ेगी तो नहीं जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने अपनी साम्प्रदायिक राजनीति के अनुसार आंदोलन का साथ नहीं दिया।

भारत छोड़ो आंदोलन का प्रसार / योगदान

• आंदोलन आरंभ होने से पहले ही सरकार ने आपरेशन "जीरो ऑवर" के द्वारा गांधी सहित

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सभी प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और कांग्रेस को अवैध संस्था घोषित कर दिया गया।

- अंग्रेजों की इस कार्यवाही से भारतीय राष्ट्रवादियों का असंतोष और अधिक उग्र हो गया तथा लगभग सम्पूर्ण भारत में हड़तालों व प्रदर्शनों का दौर शुरू हो गया।
- साम्यवादी प्रभाव से इस आंदोलन में उग्रता बढ़ने लगी थी और विशेषतः किसानों व श्रमिकों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आंदोलन को काफी प्रभावी बना दिया और प्रायः सभी प्रमुख शहरों में मजदूर हड़ताल पर चले गए और किसानों का यह संघर्ष भारत छोड़ो आंदोलन के बाद भी बंगाल में तेभागा और आंध्र क्षेत्र में तेलंगाना विद्रोह के रूप में लोकप्रिय बना रहा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• शीर्ष नेताओं की गिरफ्तारी के बाद जैसे ही अरुणा आसफ अली ने ग्वालिया टैंक मैदान में तिरंगा लहराया, वैसे ही भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ हो गया। इस आंदोलन को व्यापक व प्रभावी बनाने में युवा समाजवादियों की प्रमुख भूमिका थी. जैसे- जयप्रकाशनारायण, डा० लोहिया, आचार्य नरेन्द्रदेव व युसूफ मेहर अली जैसे व्यक्तित्वों ने गोरिल्ला पद्धति से ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा और इस आंदोलन की ऊर्जा बनाए रखने के लिए कांग्रेस रेडियो की स्थापना की गयी, जिसका संचालन ऊषा मेहता ने किया।

• आंदोलन आरंभ होते ही ब्रिटिश सत्ता से जुड़े सभी तत्वों व प्रतीकों को नष्ट करने का प्रयास किया जाने लगा जैसा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

कि 1857 के महाविद्रोह में देखा जाने लगा। सरकारी इमारतें, पुलिस थानें, रेल्वे स्टेशन, डाक सेवा आदि को ध्वस्त कर सरकारी प्रणाली को पूरी तरह से ठप्प करने का प्रयास किया गया। (तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने स्वीकारा कि आंदोलन के दौरान जिस तरह की उग्रता लोगों ने दिखायी वह स्पष्ट कर देता है कि अब भारतीय ब्रिटिश सत्ता को किसी भी स्थिति में स्वीकारने को तैयार नहीं हैं।)

• भारत छोड़ो आंदोलन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि राष्ट्रीय समानांतर सरकारों की स्थापना थी - बलिया, तामलुक, तलचर तथा सतारा में समानांतर सरकारें स्थापित हुईं। इसमें सतारा की राष्ट्रीय सरकार तो तीन वर्षों तक कायम रही। इन सरकारों ने न सिर्फ यह संकेत दिया कि अंग्रेज अब

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कमजोर हो गए हैं, बल्कि यह भी संकेत दे दिया कि भारतीयों के पास प्रशासनिक संचालन की क्षमता भी मौजूद है।

• जिस तरह राष्ट्रवाद से प्रेरित जनता आंदोलन में अपनी भागीदारी को लेकर सक्रिय थी और आजादी का लक्ष्य उसे करीब दिखने लगा था और इसी समय सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में भारत की जमीन के बाहर से आजाद हिन्द फौज जिस तरह भारतीय स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ रही थी उसने स्पष्ट कर दिया कि अब ब्रिटिश सत्ता भारत में कुछ ही दिनों की मेहमान है।

• 1945 आते-आते ब्रिटिश सत्ता ने भारत छोड़ो आंदोलन का क्रूरतम दमन कर दिया इसके बावजूद इस आंदोलन ने लोगों के मन में राष्ट्रवादिता को इस तरह स्थापित

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

कर दिया कि अब आजादी बस समय की बात है।

प्रश्नः- "भारत छोड़ो आंदोलन ने उससे अधिक प्राप्त कर दिखाया जो उससे अभीष्ट था।" आलोचना कीजिए।

प्रश्नः- भारत छोड़ो आंदोलन क्या गांधीवादी आंदोलन नहीं था और इसे किस सीमा तक स्वतः स्फूर्त आंदोलन माना जा सकता है?

उत्तरः- 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन अपने स्वरूप व क्रियाविधि के कारण पहले के गांधीवादी आंदोलनों से अलग प्रतीत होता है और कुछ विद्वानों ने इसे गांधी के नेतृत्व का आंदोलन ही नहीं माना क्योंकि:-

- आंदोलन आरंभ होने से पहले ही गांधी सहित सभी महत्वपूर्ण कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद यह आंदोलन पूरी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

ऊर्जा के साथ संचालित होता रहा।

• आंदोलन के दौरान कुछ ऐसी गतिविधियाँ निरंतर होती रही, जो गाँधीवादी रणनीति का हिस्सा नहीं हो सकती, जो द्वरदराज के एक गाँव में पुलिस थाने में हिंसा के कारण व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन वापस ले लेती थी, जबकि इस आंदोलन में ऐसी कई उग्र घटनाएँ होती रहीं।

• इन तर्कों के आधार पर भारत छोड़ो आंदोलन को गांधीवादी आंदोलन न मानना तार्किक नहीं होगा क्योंकि समय व परिस्थितियों के अनुसार गाँधीजी ने असहयोग व सविनय अवज्ञा का स्वरूप बदल दिया था।

• यह गांधीवादी रणनीति होती थी कि शीर्ष नेतृत्व कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करता था और उसका क्रियान्वयन स्थानीय नेतृत्व व जनता के हाथों में सौंप देता था वास्तव में

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES A Trusted Learning Platform KHAN SIR

इस आंदोलन के समय सांगठनिक विस्तार का विषय महत्वपूर्ण हो गया था अर्थात् कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा से प्रायः सभी भारतीय आंदोलन का हिस्सा बनने लगे थे और गांधी ने भी अगस्त प्रस्ताव में स्पष्ट कहा था कि, "प्रत्येक स्वतंत्रता सेनी अपना मार्गदर्शक स्वयं होगा।"

• सरकार की उग्र कार्यवाहियों ने जनता को प्रतिक्रियावादी बना दिया और इसी संदर्भ में गांधी ने आगा खाँ पैलेस में 23 दिनों की प्रसिद्ध भूख हड़ताल की।

• वस्तुतः गांधी यह बखूबी जानते थे कि अब लोगों के मन मस्तिष्क में राष्ट्रवादी भावना गहनता से प्रविष्ट हो चुकी है, अतः अब सरकार अपनी दमनात्मक कार्यवाही से भी राष्ट्रवाद को कुचल नहीं सकती थी। 1922 से

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

1942 आते- आते भारतीय राष्ट्रवाद वयस्क हो चुका था। अतः गांधीवादी रणनीति, अगस्त प्रस्ताव में शामिल कार्यक्रमों और राष्ट्रवादी भावना के विस्फोट के आधार पर इसे गांधीवादी नेतृत्व का वह आंदोलन माना जाना चाहिए जो अपने पहले के आंदोलनों के स्वरूप से भिन्न था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR